चंदेल कालीन बुन्देल खण्ड में सामाजिक एवं सांस्कृतिक एक ऐतिहासिक अध्ययन

Name of the Author- Dr. Mukta MIshra

Professional Affiliation- Professor (History)
Maharaja Chhatrasal Bundelkhand, Vishvavidalayay, Chhatarpur (M.P)

Name of Co- Author – Vijay Shankar Prajapati

Professional Affiliation- Assistant Professor (History)
Government College, Baldevgarh Dist – Tikamgarh M.P.

परिचय :–

राजपूतों की उत्पत्ति एक अत्यन्त कर्णभेदी विषय रहा है जिसकी पूर्व मध्ययुगीन एवं मध्ययुगीन भारत से संबंधित ऐतिहासिक रचनाओं में प्राप्त खीचांतानी हुई हैं इन रचनाओं में विभिन्न मतों में परस्पर अत्यधिक विरोध दृष्टिगोचर होता हैं एक ओर तो राजपूतों का संबंध गुप्तोतरकालीन विदेशी प्रचासियों से जोड़ते हुये उनकी उत्पत्ति से संबंधित 'अग्निकुल' नामक उत्तरकालीन गाथा को शुद्धिकरण कथानक का रूप दिया गया और दूसरी ओर राजपूतों को विशुद्ध क्षत्रिय कुलों से उत्पन्न प्रदर्शित करने के लिए जबरदस्ती औचित्यता दिखाने का प्रयास किया गया है। राष्ट्रीयतापूर्ण इतिहास लेखन के चरमोत्कर्ष काल में राजपूतों के सैनिक एवं शौर्यपूर्ण गुणों को बार बार प्रस्तुत किया गया। ऐतिहासिक रचनाओं के स्तर पर सी.बी. वैद्य को इस दृष्टिकोण की पराकाष्ठा का प्रतिनिधि कहा जा सकता है।

अब जो राजपूत प्रकाश में आए और जो अपने शौर्य से मध्ययुगीन भारतीय इतिहास को गौरव प्रदान करते है, वे वैदिक आर्यो के वंशजों के अतिरिक्त और कोई हो ही नहीं सकते। वैदिक आर्यो के अलावा कोई भी अपने पूर्वजों के धर्म की रक्षा के लिए इतनी वीरतापूर्वक नहीं लड़ सकता था। इस दृष्टिकोण का एक अन्य पक्ष हाल की रचनाओं में दिए गए इस प्रस्ताव से प्रकट होता है कि राजपूतों का उदय विदेशी आक्रमणों का विरोध करने की प्रक्रिया के दौरान हुआ और यह कि उन्होंने 'स्वेच्छापूर्वक राष्ट्र और उसके लोगों एवं संस्कृति की रक्षा के लिए क्षत्रियों के कर्तव्य का भार अपने कंधो पर ले लिया।

वृत्तांतात्मक राजनीतिक इतिहिास के स्तर पर राजपूतों के प्रारंभिक इतिहास का पुनर्गठन एक ऐसे स्वरूप का अनुसरण करता है जिसे हाल में 'वशीकरण' की प्रवृत्ति की संज्ञा दी गई है। यह प्रवृत्ति अभिलेखों में पाई जाने वाली वंशावलियों का अध्ययन करने वाले अधिकांश प्रयासों में दृष्टिगोचर होती है और इन प्रयासों के फलस्वरूप प्रकट होने वाला तथ्य है'अनिश्चित तिथि एवं वंश के अनेक शासकों के अभिलेखों को वंशात्मक ढांचे में तर्कसंगत ढंग से बैठाने की प्रथा और उसके द्वारा आंकड़ों का अभाव होते हुए भी उन पर लौकिक एवं प्रजननात्मक नातेदारियां प्रदान करना और इसके अतिरिक्त इससे भी अधिक व्यापक वह प्रथा जिसके अनुसार छोटी वंशावलियों के सानिध्य एवं ऋंखलाबंधन से उन्हें प्रभावशाली पूर्ण वंशावली में आरोपित किया जाता था – यह पूर्ण वंशावली वास्तव में अपने अंगो के योग से कहीं अधिक बड़ी बन जाती है।

राजपूतों के आरंभिक इतिहासों से संबंधित अधिकाशं नवीनतम रचनाएं भी इन धारणायें एवं रीतियों से अधिक भिन्न नहीं है। इसका परिणाम यह है कि राजस्थान से संबंधित विस्तृत अध्ययनों में भी पूर्व मध्ययुगीन काल में राजपूतों की उत्पत्ति का विश्लेषण ऐसी प्रक्रिया के रूप में कभी नहीं किया गया जिनकी समांतर प्रक्रियाएं संभवतः इस क्षेत्र के बाहर होने वाली पूर्व मध्ययुगीन गतिविधियों में हुई हों। अतः राजपूतों के पृथक रूप से किया गए अध्ययनों में, सरल सामान्यीकरणों को छोड़कर बहुत कम ही उन कारकों का उल्लेख किया गया है जो पूर्व मध्ययुगीन भारत में क्रियाशील थे। यह स्वीकार किया जा सकता है कि संभवतः राजपूतों के उदय का स्वरूप पश्चिमी भारत के बाहर हाने वाली गतिविधियों से विशेष रूप से हटकर हो फिर भी यह अनुरोध उचित ही है कि इस पूर्ण घटना का विश्लेषण एक संपूर्ण प्रक्रिया के रूप में होने चाहिए। प्रस्तुत लेख में एक प्रक्रिया एवं कालांतर में राजपूत कहलांए जाने वाले कुलों के इतिहास के आरंभिक चरणों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। यह प्रयास अभिष्ट पूर्ण अध्ययन की एक रूपरेखा मात्र है।

चंदेलवंश भारत का प्रसिद्ध राजवंश हुआ जिसने 08वीं से 12वीं शताब्दी तक स्वतंत्र रूप से यमुना और नर्मदा के बीच, बुंदेलखंड तथा उत्तरप्रदेश के दक्षिणी–पश्चिमी भाग पर राज किया। चंदेलवंश के शासकों का बुंदेलखंड के

इतिहास में विशेष योगदान रहा है। चंदेलों ने लगभग चार शताब्दियों तक बुंदेलखंड पर शासन किया। चन्देल शासक न केवल महान विजेता तथा सफल शासक थे, अपितु कला के प्रसार तथा संरक्षण में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। चंदेलों का शासनकाल आमतौर पर बुंदेलखंड के शांति और समृद्धि के काल के रूप में याद किया जाता है। चंदेलकालीन स्थापत्य कला ने समूचे विश्व को प्रभावित किया उस दौरान वास्तुकला तथा मूर्तिकला अपने उत्कर्ष पर थी। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है खजुराहों के मंदिर इस वंश का प्रथम राजा नन्नुक देव था। बुंदेलखंड के चंदेल मध्यभारत में एक शाही राजवंश थे। उन्होंने 9वीं और 13वीं शताब्दी के बीच बुंदेलखंड क्षेत्र (तब जेजाक भुक्ति कहा जाता था) पर शासन किया चंदेलों को उनकी कला और वास्तुकला के लिए जाना जाता है विशेष रूप से उनकी मूल राजधानी खजुराहों में मंदिरों के लिए। उन्होंने अजायगढ़, कालिंजर के गढ़ों और बाद में उनकी राजधानी महोबा सहित अन्य स्थानों पर कई मंदिरो, जल निकायों, महलों और किलों की स्थापना की। चंदेलों ने शुरू में कान्यकुब्ज (कन्नौज) के गुर्जर– प्रतिहारों के सामंतों के रूप में शासन किया। 10 वीं शताब्दी के चंदेल शासक यशोवर्मन व्यावहारिक रूप से स्वतंत्र हो गए, हालांकि उन्होंने प्रतिहारो की अधीनता स्वीकार करना जारी रखी। उनके उत्तराधिकारी धनंग के समय तक, चंदेल एक प्रभु सत्ता बन गए थे। उनकी शक्ति में वृद्धि हुई और गिरावट आई क्योंकि उन्होंने पड़ोसी राजवंशी, विशेष रूप से मालवा के परमार और त्रिपुरी के कलचुरियों के साथ लड़ाई लड़ी। 11वीं शताब्दी के बाद से, चंदेलों को उत्तरी मुस्लिम राजवंशो द्वारा छापे का सामना करना पड़ा, जिसमें गजनवी और शामिल थे। चाहमना और घोरी आक्रमणों के बाद चंदेल शक्ति 13वीं शताब्दी की शुरूआत में प्रभावी रूप में समाप्त हो गई।

2.चन्देल राजपूतों का उद्भव

चंदेल मूल रूप से भर या गोंड इन दो समुदायों के मिश्रण थे, बाद में उन्होंने खुद को राजपूत के रूप में स्टाइल किया, जो राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने पर क्षत्रिय या राजपूत बन बए। इसी तरह गहरवार भर से जुड़े हुए है। बुंदेला और उत्त्री राठौर गढ़वाड़ की शाखाऍं है। धर्मशास्त्र निचली जातियों के उच्च जातियों में जाने की संभावना को स्वीकार करता हे। ब्रिटिश इंडोलॉजिस्ट वी.ए. स्मिथ का भी मानना था कि चंदेल मूल रूप से एक गैर आर्य जनजाति थे, जो मूल रूप से भर या गोंड़ मूल के थे इसका समर्थन आर.सी. मजूमदार सहित अन्य कुछ विद्वानों ने भी किया था चंदेलों ने एक आदिवासी देवी मनिया की पूजा की, जिनके मंदिर महोबा और मनियागढ़ में स्थित है। इसके अलावा वे ऐसे स्थानों से जुड़े है जो भर और गोंड़ो से भी जुड़े है। इसके अलावा रानी दुर्गावती जिनके परिवार ने दावा किया कि चंदेला वंश ने गढ़ा मंडला के एक गोंड प्रमुख से शादी की थी।

चंदेला शिलालेखों के अनुसार नानुका के उत्तराधिकारी वक्पति ने कई दुश्मनों को हराया । वक्पति के पुत्र जयशक्ति (जेजा) और विजय शक्ति (तवज) ने चंदेला शक्ति को समेकित किया। एक महोबा शिलालेख के अनुसार, चंदेला क्षेत्र को जयशक्ति के बाद ''जेजाकभुक्ति'' नाम दिया गया था। विजय शक्ति के उत्तराधिकारी रहीला को प्रंशसात्मक शिलालेख में कई सैन्य जीत का श्रेय दिया जाता है। रहीला के पुत्र हर्ष ने संभ्वतः राष्ट्रकूट आक्रमण के बाद या अपने सौतेले भाई भोज द्वितीय के साथ महिपाल के संघर्ष के बाद प्रतिहार राजा महीपाल के शासन को बहाल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेखों में उन्हें चन्द्रात्रेय ऋषि का वंशज कहा गया है जो अत्रि के पुत्र थे। चन्देल अपना सम्बंध चन्द्रमा से जोड़ते है जो इस बात का सूचक है कि वे चन्द्रवंशी क्षत्रिय रहे होंगे। चन्देल वंश की स्थापना 831 ईस्वी के लगभग नन्नुक नामक व्यक्ति ने की थी। उसकी उपाधि 'नृप' तथा 'महीपति' की मिलती है।

इससे सूचित होता है कि वह स्वतंत्र शासक न होकर कोई सामन्त सरदार रहा होगा। इस समय की सार्वभौम सत्ता प्रतिहारों की थी। अतः नन्नुक ने उन्ही के अधीन अपना शासन प्रारम्भ किया। नन्नुक के बाद क्रमशः वाक्वपति, जयशक्ति, विजयशक्ति तथा राहिल के नाम मिलते है। इनमें से प्रत्येक ने एक दूसरे के बाद सामन्त रूप में ही शासन किया तथा यथासंभव अपनी शक्ति का विस्तार करते रहे। प्रारम्भिक राजाओं में राहिल कुछ शक्तिशाली था। खजुराहों लेख में उसकी शक्ति एवं वीरता की प्रशंसा की गयी है। वह एक निर्माता भी था जिसने मंदिर एवं तालाब बनवाये थे। इनमें अजयगढ़ का मंदिर तथा महोबा के समीप राहिल सागर तालाब विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

3.चन्देलकालीन साम्राज्य एवं वंशावली

- नन्नुक (831–45) संस्थापक
- वाक्पति चंदेल (845–970)
- जय शक्ति चन्द्रेल और विजय शक्ति चन्देल (870–900)

- राहित चन्देल (900–900)
- हर्ष चन्देल (900–925)
- यशोवर्मन चंदेल (925–950)
- धंगदेव (950–1003)
- गंडदेव (1003–1017)
- विधाधर (1017–1029)
- विजयपाल (1030–1045)
- देववर्मन (1050–1060)
- कीतिसिंह चन्देल (1060–1100)
- सल्लक्षनवर्मन (1100–1115)
- जयवर्मन (1115–???)
- प्रथ्वीवर्मन(1120–1129)
- मदनवर्मन (1129–1162)
- यशोवर्मन द्वितीय (चन्देल) (1165–1166)

लगभग 900 ई. तक चन्देलों ने प्रतिहारों की अधीनता में शासन किया तथा धीरे –धीरे अपनी शक्ति का विस्तार करते रहे। राहिल का पुत तथा उत्तराधिकारी हर्ष (90–925 ईस्वी) एक शक्तिशाली शासक था जिसके समय में चन्देलों ने प्रतिहारों की दासता का जुआ उतार फेका। खजुराहों लेख में उसे 'परमभट्टारक' कहा गया है जो उसकी स्वतंत्र स्थिति का द्योतक है। नन्यौरा पत्र से पता चलता है कि हर्ष की भयानक सेना ने चारों और आतंक फैला दिया तथा अनेक राजाओं को कैद बना लिया यह भी कहा गया है कि अपने शत्रुओं को पराजित करने के उपरांत हर्ष ने सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा की ।इन विवरणों में स्पष्ट होता है कि हर्ष अपने पूर्वगामियों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली था। खजुराहों लेख के अनुसार उसने प्रतिहार शासक क्षितिपाल (महीपाल) को पुन कन्नौज की गद्दी पर बैठाया। ऐसा प्रतीत होता है कि महीपाल को राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र तृतीय ने परास्त कर कन्नौज की गद्दी से उतार दिया था परन्तु चन्देल हर्ष की सहायता पाकर वह पुनः कन्नौज जीतने में सुल हुआ।

इससे यह सूचित होता है कि प्रतिहार साम्राज्य उत्तरोत्तर निर्बल हो रहा था तथा उसके स्थान पर चन्देल शक्ति उभर रही थी। यद्यपि हर्ष के कुछ समय बाद तक भी चन्देल प्रतिहारों के सामन्त बने रहे तथापि उनकी अधीनता नाम मात्र की ही थी। हर्ष ने अपने समकालीन दो राजवंशो चौहान एवं कलचुरि के साथ वैवाहिक सम्बंध स्थापित कर अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली। उसने अपने वंश की कन्या नट्टादेवी का विवाह कलचुरि नरेश कोक्कल के साथ तथा स्वयं अपना विवाह चाहमान वंश की कन्या ंचुका के साथ किया था। कलचुरी राष्ट्रकूटों के भी संबंधी थे और कोक्कल ने अपनी कन्या का विवाह राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण द्वितयी के अधिपति को खुली चुनौति दिये बगैर ही हर्ष ने धीरे –धीरे अपनी आंतरिक एवं बाहय शक्ति काफी मजबूत बना यिला। वह वैष्णव धर्मावलम्बी था।

4. <u>चंदेलकालीन साम्राज्य का पतन</u> :–

हर्ष के पुत्र यशोवर्मन $(925-950CE)$ ने प्रतिहार अधीनता स्वीकार करना जारी रखा, लेकिन व्यावहारिक रूप में स्वतंत्र हो गया । उसने कलंजारा के महत्वपूर्ण किले को जीत लिया। एक 953–954 सदी के खजुराहों के शिलालेख उसे कई अन्य सैन्य सफलताओं के साथ श्रेय देता है, जिसमें गौंडा (पाला के साथ पहचाना गया) खासा, छेदी (त्रिपुरी का कलचुरि)कोसला(संभवता सोमवमेश) मिथिला (संभवतः छोट उपनदी शासक) मालव (पारमारों के साथ पहचाने गए) कौरव, कश्मीरी और गुर्जर थे। हालांकि ये दावे अतिरंजित प्रतीत होते हैं, क्योंकि उतत्री भारत में व्यापक विजय के समान दावे अन्य समकालीन राजाओं जैसे कलचुरी राजा युवा और राष्ट्रकूट राजा कृष्ण के रिकार्ड में भी पाए जाते है। यशोवर्मन के शासनकाल ने प्रसिद्ध चंदेला युग कला और वास्तुकला की शुरूआत को चिन्हित किया। उन्होंने खजुराहों में लक्ष्मण मंदिर की स्थापना की। पहले के चंदेला शिलालेखो के विपरीत, यशोवर्मन के

उत्तराधिकारी धनंगा $(950 - 999CE)$ के रिकॉर्ड में किसी भी प्रतिहार अधिपित का उल्लेख नहीं है। यह इंगित करता है कि धनंगा ने औपचारिक रूप से चंदेला संप्रभुता की स्थापना की। खजुराहों के एक शिलालेख में दावा किया गया है कि कौशल, कथा (विदर्भ क्षेत्र का हिस्सा) कुंतला और सिम्हला के शासकों ने धनंगा के शासन को विनम्रता से स्वीकारा। यह भी दावा करता है कि आंध्र, अंग, कांची और राह के राजाओं की पत्नियों युद्धो में उनकी सफलता के परिणामस्वरूप उनकी जेलों में रही। ये एक दरबारी कवि द्वारा विलक्षण अतिश्योक्ति प्रतीत होता है, लेकिन बताता है कि धनंगा ने व्यापक सैन्य अभियानकिए। अपने पूर्ववर्ती की तरह, धनंगा ने भी खजुराहों में एक शानदार मंदिर की स्थापना की, जिसे विश्वनाथ मंदिर के रूप में पहचाना जाता है। इस अविधि के दौरान चंदेला कला और वास्तुकला अपने चरम पर पहुंच गया। लक्ष्मण मंदिर $(930 - 950CE)$, विश्वनाथ मंदिर $(999 - 1002\ CE)$ और कंदरिया महादेव मंदिर $(1030\ CE)$का निर्माण क्रमशः यशोवर्मन, धनगा और विद्याधारा के शासनकाल के दौरान किया गया थां ये नागर –शैली के मंदिर खजुराहों में सबसे अधिक विकसित शैली के प्रतिनिधि है।

■

विद्याधार के शासनकाल के अंत तक गजनवी के आक्रमणों ने चंदेला साम्राज्य को कमजोर कर दिया था। इसका लाभ उठाते हुए, कलचुरी राजा गंगेय–देव ने राज्य के पूर्वी हिस्सों को जीत लिया। चंदेला शिलालेखों से पता चलता है कि विद्याधार के उत्तराधिकारी विजयपाल $(1035 - 1050CE)$ने एक युद्ध में गंगेया के हराया था। हालांकि, चंदेला की शक्ति में विजयपाल के शासन काल के दौरान गिरावट शुरू हो गई। ग्वालियर के कच्छपघाटों ने संभवतः इस अवधि के दौरान चंदेलों के प्रति अपनी निष्ठा छोड़ दीं विजयपाल का बड़ा पुत्र देववर्मन गंगेया पुत्र लक्ष्मी–कर्ण द्वारा पराजित कर दिया गया था। उसके छोटे भाई कीतिवर्मन ने लक्ष्मी–गर्ण को हराकर चंदेला शक्ति को फिर से जीवित कर दिया। कीर्तिवर्मन के पुत्र सल्लक्षणवर्मन ने संभवतः उनके प्रदेशों पर हमला कर परमारों और कलचुरियों के खिलाफ सैन्य सफलताएँ हासिल की। एक मऊ शिलालेख से पता चलता है कि उन्होंने अंतरवेदी क्षेत्र (गंगा–यमुना दो आब) में भी सफल अभियान चलाया था। उनका पुत्र जयवर्मन धार्मिक स्वभाव का था और शासन के थक जाने के बाद उसने राजगद्दी छोड़ दी। जयवर्मन की मृत्यु उत्तराधिकारी विहीन हुई प्रतीत होती है, क्योंकि उसका उत्तराधिकारी कीर्तिवर्मन का छोटा पुत्र, उसका चाचा पृथ्वीवर्मन हुआ था चंदेला शिलालेख उसके लिए किसी भी सैन्य उपलब्धियों का वर्णन नहीं करता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक आक्रामक विस्तारवादी नीति को अपनाए बिना मौजूदा चंदेला क्षेत्रों को बनाए रखने पर केंद्रित था। जब तक पृथ्वीवर्मन के पुत्र मदनवर्मन $(1128 - 1165\ CE)$ सिंहासन का उत्तराधिकारी हुआ, तब तक दुश्मन के आक्रमणों से पड़ोसी कलचुरी और परमारा राज्य कमजोर हो गये थे। इस स्थिति का लाभ उठाते हुए, मदनवर्मन ने कलचुरी राजा गया–कण को पराजित किया, और संभवः बघेलखंड क्षेत्र के उत्तरी भाग को कब्जा कर लिया। हालांकि, चंदेलों ने इस क्षेत्र को गाया–कर्ण के उत्तराधिकारी नरसिन्हा के हाथों हार गया। मदनवर्मन ने भीमसा (विदिशा) के आसपास, परमारा साम्राज्य की पश्चिमी परिधि पर क्षेत्र पर कब्जा कर लिया। यह संभवतः परमारा राजा श्योवर्मन या उनके पुत्र जयवर्मन के शासनकाल के दौरान हुआ था। एक बार फिर, चंदेलो ने लंबे समय तक नवगठित क्षेत्र को बरकरार नहीं रखा और यशोवर्मन के बेटे लक्ष्मीवर्मन ने इस क्षेत्र को फिर से कब्जा कर लिया।

गुजरात के चालुक्य राजा जससिम्हा सिद्धराजे ने भी परमारा क्षेत्र पर आक्रमण किया, जो कि चंदेला और चालुक्य राज्यों के बीच स्थित था। इसने उन्हे मदनवर्मन के साथ संघर्ष हुआ। इस संघर्ष का परिणाम अनिर्णायक प्रतीत होता है, क्योंकि दोनों राज्यों के रिकार्ड जीत का दावा करते है। कलुंजारा शिलालेख से पता चलता है कि मदनवर्मन ने जयसिम्हा को हराया था। दूसरी और गुजरात के विभिन्न वर्णसंकरो का दावा है कि जयसिम्हा ने या तो मदनवर्मन को हराया या उससे उपहार प्राप्त किया। मदनवर्मन ने अपने उत्तरी पड़ोसियों, गढ़वलाओं के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे।

परमर्दी (शासनकाल 1165–1203 ईस्वी) ने छोटी उम्र में चंदेला सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। हालांकि उसके शासनकाल के शुरूआती वर्ष शांतिपूर्ण थे, 1182–1183 ईस्वी के आसपास, चाहमाना शासक पृथ्वीराज चौहान ने चंदेला साम्राज्य पर आक्रमण किया। मध्ययुगीन पौराणिक गाथागीतों के अनुसार पृथ्वीराज की सेना ने तुर्क बलों द्वारा एक आश्यर्चजनक हमले के बाद अपना रास्ता खो दिया और अनजाने में चंदेला की राजधानी महोबा में डेरा डाल दिया। इससे पृथ्वीराज के दिल्ली के लिए रवाना होने से पहले चंदेलो और चौहान के बीच थोड़ा संघर्ष हुआ। कुछ समय बाद, पृथ्वीराज ने चंदेलों साम्राज्य पर आक्रमण किया। और महोबा को युद्ध में हरा दिया। परमदी कायर ने कलंजारा किले में शरण ली। इस लड़ाई में आल्हा, ऊदल और अन्य सेनापतियों के नृतृत्व में चंदेला बल

हार गया। विभिन्न गाथा के अनुसार, परमर्दी ने या तो शर्म से आत्महत्या कर ली या भाग गया। पृथ्वीराज चौहान की महोबा की छापेमारी उनके मदपुर के शिलालेखों में अंकित है। हालांकि, भाटों की किंवदतियों में ऐतिहाकस अशुद्धियों के कई उदाहरण है। उदाहरण के लिए यह ज्ञात है कि परमारी चौहान की जीत के तुरंत बाद सेवानिवृत नहीं हुआ या मृत्यु नहीं हुई थी। उसने चंदेला सत्ता को फिर बहाल किया, और लगभग $(1202 - 1203\ CE)$ तक एक प्रभुता के रूप में शासन किया, जब दिल्ली के घुरिड राज्यपाल ने चंदेला साम्राज्य पर आक्रमण किया। दिल्ली सल्तनत के एक इतिहासकार, ताज–उन–मासीर के अनुसार, परमर्दी ने दिल्ली की सेनाओं के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। उसने सुल्तान को उपहार देने का वादा किया, लेकिन इस वादे को निभाने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। उनके दीवान ने हमलावर ताकतों के लिए कुछ प्रतिरोध किया, लेकिन अंत में उसे अधीन कर यिला गया। 16वीं शताब्दी के इतिहासकार फरिश्ता का कहना है कि परमर्दी की हत्या उसके ही मंत्री ने की थी, जो दिल्ली की सेनओं के सामने आत्मसमर्पण करने के राजा के फैसले से असहमत था। चंदेला सत्ता दिल्ली की सेना के खिलाफ अपनी हार से पूरी तरह उबर नहीं पाई थी। त्रिलोकीवर्मन, वीरवर्मन और भोजवर्मन द्वारा पदमर्दी को उत्तराधिकारी बनाया गया। अगले शासक हम्मीरवर्मन ने शाही उपाधि महाराजाधिराज का उपयोग नहीं किया, जो बताता है कि चंदेला राजा की उस समय तक निम्न दर्जे की स्थिति थी। बढ़ते मुस्लिम प्रभाव के साथ –साथ अन्य स्थानीय राजवंशी, जैसे बुंदेलो, बघेलों और खंगार राजाओं के उदय के कारण चंदेला शक्ति में गिरावट जारी रही। हम्मीरवर्मन के वीरवर्मन द्वितीय सिंहासन पर आरूढ़ हुआ, जिसके शीर्षक उच्च राजनीतिक दर्जे की स्थिति का संकेत नहीं देते है। परिवार की एक छोटी शाखा ने कलंजारा पर शासन जारी रखा। इसके शासक को 1545 ईस्वी में शेरशाह सूरी की सेना ने मार डाला। महोबा में एक और छोटी शाखा ने शासन किया, दुर्गावती, इसकी एक राजकुमारी ने मंडला के गोंड शाही परिवार में शादी की ।

5. <u>चंदेलकालीन आर्थिक संस्कृति व कला का विवरण</u> :–

चंदेल शासन परंपरागत आदर्शो पर आधारित था। चंदेलो को उनकी कला और वास्तुकला के लिए जाना जाता है। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर कई मंदिरों, जल निकायों, महलों ओर किलों की स्थापना की। उनकी सांस्कृतिक उपलब्धियों का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण खजुराहों में हिन्दू और जैन मंदिर है। तीन अन्य महत्वपूर्ण चंदेलागढ़ जयपुरा –दुर्गा (आधुनिक अजैगढ़) और महोत्सव नगर (आधुनिक महोबा) थे। हम्मीरवर्मन को वीरवर्मन द्वितीय द्वारा सफल किया गया था। जिनके शीर्ष उच्च राजनीतिक स्थिति का संकेत नहीं देते हैं। परिवार की एक छोटी शाखा ने कलंजारा पर शासन जारी रखा इसके शासक को 1545 ईस्वी में शेरशाह सूरी की सेना ने मार डाला। महोबा में एक और छोटी शाखा ने शासन किया, दुर्गावती, इसकी एक राजकुमारी ने मंडला के गोंड शाही परिवार में शादी की। कुछ अन्य शासक परिवारों ने भी चंदेला वंश का दावा किया।

<u>शोध सारांश</u> –

वर्तमान भारत में अर्थ को धन, सम्पत्ति, पूँजी इत्यादि विभिन्न नामों से जाना गया। प्राचीन काल में राजकीय समपत्ति भी अर्थ का एक ही अंग था। इसके अंतर्गत राजस्व, जमीन,कृषि, खान इत्यादि आय के साधनों को स्थान मिला। प्राचीन भारतीय दार्शनिकों द्वारा पुरूषार्थ में धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को स्थान दिया गया। जिसमें मानव जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को, प्राप्त करने के लिए अर्थ को भी महत्वपूर्ण माना गया। इसी संदर्भ में डॉ. कापड़िया का उल्लेख है कि मोक्ष मानव जीवन का परम लक्ष्य तथा आध्यात्मिक अनुभूति का प्रतिक है। अर्थ सम्पत्ति तथा उनके भोग की तरफ संकेत करता है। जबकि अर्थ एवं काम सांसारिक क्रिया –कलापों का भी प्रतिनिधित्व करता है। अर्थ मं मात्र मुद्रा ही नहीं अपितु भौतिक सुख –सुविधाएँ प्रदान करने वाली समस्त चीजों का समावेश होता है। अर्थ एक ऐसा कारक है जिससे धार्मिक कार्य, आनन्द, वासना, साहस, क्रोध, विद्या उत्पन्न होती है अर्थात धन या सम्पत्ति के अभाव में इन कार्यो में सफलता प्राप्त करना कठिन होता है। अर्थ का विकास मानव सभ्यता के साथ ही प्रारंभ हो गया था। प्रारम्भिक मानव यायावर, आखटेक, गुफावासी था। शनैः शनैः खाद्य संग्रहण के दौरान वस्तु विनमय के माध्यम से आर्थिक क्रिया–कलाप प्रारंभ हुए जो कि राजतंत्र में अर्थ का रूप धारण कर लिये। राज्य के सप्ताप सिद्धान्त में कोष को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। विभिन्न प्रवृत्तियों और आन्दोलनों के आधार पर बुन्देलखण्ड काव्य के कुल सात युग मानते जा सकते हैं जिन्हे अध्ययन के सुविधा से निम्न नामों से अभिहित किया गया है।

1. भाषा काव्य आंदोलन – नवीं शती विक्रमी से तेरहवी शती तक।
2. कथा काव्य काल – तेरहवीं से सोलहवीं सदी विक्रमी तक।
3. रीति भक्ति काव्य काल– सत्रहवी शादी से सत्रहवी शती विक्रमी तक।

4. सांस्कृतिक उन्मेष काल – सत्रहवी शती से अ्टहारवी शती विक्रमी तक।
5. श्रृंगार काव्य काल– अट्हारवी शती से उन्नीस सौ पचास विक्रमी तक।
6. स्वतंत्रता पूर्व आधुनिक– सम्वत् 1950 से 2000 विक्रमी तक।
7. अत्याधुनिक काल – सम्वत् 2000 से अब तक।
8. भाषा काव्य आंदोलन काल – 9वीं शती विक्रमी से 13वीं शती विक्रमी तक

छान्दस का संस्कृत में अपभ्रंशी के माध्यम से लोक भाषा में विकसित होना एक घटना नहीं है। यह समय की आवश्कता रही है। छान्दस, प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश के समीकरणों पर अनेक विचार दिए गए है। छटी, शताब्दी में अपभ्रंश का प्रयोग भाषा के रूप में मिलता है। 12वीं शताब्दी तक वह साहित्यिक भाषा सी रही है पर जनपदीय बोलियॉ से यह भी मुक्त नहीं मानी गयी है। नव्य भारतीय आर्य भाषा का विकास मध्यदेशीय शोर सेनी से माना गया है और अपभ्रंश के विकासोन्मुख रूप ग्रहण करते समय अवह की स्थिति मानी गयी । अवह का प्रयोग सबसे पहले अपभ्रंश के लिए हुआ है। अनेक जैन रचनाएं, नाथ पंथियो की रचनाएं आदि सामने आयी है। सिद्धों ने जिस भाषा का प्रयोग किया है वह लोक भाषा अधिक है। हिन्दी का प्रारंभिक नाम भाषा ही कहा गया है।

6. <u>निष्कर्ष</u> :–

भारत में राजपूतों को सामाजिक दृष्टि से उच्च स्थान प्राप्त है, इसका मुख्य कारण उनका शौर्य है, भारतीय इतिहास उनके शौर्य से भरा पढ़ा उनकी वीरगाथाएं स्कूलों में पढ़ाई जाती है, उनमें सभी राजपूत परिहार, परमार, चौहान, राणा, चन्देल इत्यादि शामिल है। राजपूत (संस्कृत में राणा पुत्र, राणा का पुत्र, जागीरदार अथवा क्षत्रिय प्रमुख की संतान) भारतीय महाद्वीप में विभिन्न वंशो का वंशावली है, जिसमें विचारधारा और सामाजिक स्थिति के साथ स्थानीय समूह व जातियों की विशाल बहुघर की समूह शामिल है। राजपूत शब्द में योद्धाओं से जुड़ा हुआ है। राजपूतों की उत्पत्ति एक अत्यंत कर्णभेदी विषय रहा है। जिसकी पूर्व मध्ययुगीन एवं मध्ययुगीन भारत से संबंधित ऐतिहाकस रचनाओं में र्प्यटन खींचातानी हुई है। इन रचनाओं में विभिन्न मतों परस्पर अत्यधिक दृष्टिगोचर होता है। एक तरफ राजपूतों का संबंधि गुप्तोत्तर कालीन प्रवासियों से जोड़ते है, दूसरी तरफ राजपूतों को विशुद्ध क्षत्रिय कुलों से तपन्न प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। चन्देलों की उत्पत्ति को लेकर भी इसी तरह के विरोधीमत है, एक मत के अनुसार से मूलरूप से भर या गौड़ इन को समुदायों के मिश्रण थे, दूसरे मतानुसार इन्हे इनकी उत्पत्ति चन्द्रमा से जोड़ी जाती है दोनो की स्थिति में इन्होने अपने आप को राजपूत के रूप में प्रस्तुत किया। जो राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने पर क्षत्रिय या राजपूत बन गए। चन्देल कालीन स्थापत्य कला ने पूरे विश्व को प्रभावित किया उस दौरान वास्तुकला एवं मूर्तिकला अपने चरम पर थी। इसका सबसे बड़ा उदाहरण खजुराहों के मंदिर एवं इस वंश का राजा ननुक देव थ। बुन्देलखंड के चंदेल मध्यभारत में एक शाही राजवंश थे। उन्होने 9वीं एवं 13वीं शताब्दी के बीच बुन्देल क्षेत्र पर शासन किया, तब इन्हे जेजाक मुक्ति कहा जाता था। इनकी मूल राजधानी खजुराहों में मंदिरो की कला व वास्तुकला वर्तमान में पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। उन्होंने अजयगढ़, कालिंजर के गदो और बाद में उनकी राजधानी महोबा सहित, अन्य स्थानों पर कई मंदिरो जब निकायों, महलों और किलों की स्थापना की। शुरू में चन्देल तिहार राजाओं के अधीन स्वतंत्र जागीरदार हुआ करते थे, इनकी शक्ति धीरे–धीरे बढ़ती गई और हर्ष के पुत्र रासोवर्मन $(925 - 950\ CE)$ प्रतिहार राजाओं की अधीनता स्वीकार रखा, लेकिन व्यवहारिक रूप से स्वतंत्र हो गये। 953–999 सदी के रिकार्ड में प्रतिहार अधिपति का कोई उल्लेख नहीं है अर्थात चन्देलों की शक्ति बढ़ चुकी थी और इस समय का बुन्देलखण्ड में कोई प्रतिहार राजा नहीं था यह चंदेलों के उत्कर्ष का समय था। 1035–1050 सदी में चंदेलों की शक्ति में विजयपाल के शासन काल में पुत्र , चन्देल सर्वशक्तिमान हुए और लगभग पूरे बुन्देलखण्ड व उसके आसास इन्ही का शासन रहा। 1165–1203 छोटी उम्र के चंदेला शासक परमर्दी के शासनकाल में 1183 ई. सदी के आसपास चाहमात्र शासक पृथ्वीराज चौहान ने चंदेला साम्राज्य पर आक्रमण किया, इस लड़ाई में आल्हा, ऊदल और अन्य सेनापतियों के नेतृत्व में चंदेला हार गया, इस युद्ध से चंदेला साम्राज्य का पतन शुरू हो गया, 1288–1311 हम्मीर वर्मन ने शाही उपाधि महाराजाधिराज का उपयोग नहीं किया जो बताता है कि चंदेला राजा की उस समय तक निम्न दर्जे की स्थिति थी अर्थात चन्देला साम्राज्य का पतन जारी रहा और एक छोटी शाखा के रूप में कलंजारा पर चंदेला शासन जारी था लेकिन इसके शासक वीरवर्मन को 1545 में शेरशाह शूरी की सेना ने मार डाला, इस घटना के साथ ही चंदेला साम्राज्य का पूर्णनः पतन हो गया।

बुन्देल खण्ड में प्रभावी शासन काल 9वीं सदी से 13वीं सदी के मध्य रहा। हालाकि 9वीं सदी के पहले व 13वीं सदी के बाद भी ये शासन रहे पर प्रभावी नहीं रहे। चंदेल शासन परंपरागत आदर्शो पर आधारित था। चंदेलो की

उनकी कला एवं वास्तुकला के लिए जाना जाता है। उन्होंने विभिन्न स्थानों पर कई मंदिरो, जननिकायो, महलों और किलों की स्थापना की। उनकी सांस्कृतिक उपलब्धियों का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण खजुराहों में हिन्दू व जैन मंदिर है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.	बी.डी. चट्टोपाध्याय	:–	''राजपूतों की उत्पत्ति–पूर्व मध्ययुगीन राजस्थान में राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक प्रक्रियाएं''
2.	डॉ. शन्तिदेव सिसोदिया	:–	''पॉल्टिकल हिस्ट्री ऑफ चन्देल डायेनेस्टी''
3.	मित्रा शिशिर कुमार	:–	''दा अरली रूलर्स आफ खजुर''
4.	सेन शेलेन्द्र नाथ	:–	एन्सिन्ट इण्डियन हिस्टरी एण्ड सिविलाइजेशन''
5.	डॉ. ए.के. चतुर्वेदी	:–	''प्राचीन भारत का इतिहास''
6.	चन्देल युगीन ललित कलाएं	:–	बेवसाइट